



अकबर महान

अकबर का जन्म अमरकोट के राजा वीसाल के महल में 15 अक्टूबर 1542 ई0 को हुआ था। अकबर का बचपन बड़े ही संघर्ष के मध्य व्यतीत हुआ। कई बार तो उन्हें अपनी माता हमीदाबानो तक से अलग हो जाना पड़ा और भाग्य के सहारे जीवित रहना पड़ा लेकिन बाल्यावस्था की मुसीबतों ने उन्हें अत्यंत निर्भीक और साहसी बना दिया था। उनका मन खेल-कूद, घुड़सवारी, तलवार चलाने, हाथियों की लड़ाई आदि देखने में अधिक लगता था।

बीस वर्ष की आयु प्राप्त होने तक अकबर ने एक उदार मुगल शासक के रूप में यश प्राप्त कर लिया। मध्यकाल में यह प्रथा थी कि जो सैनिक युद्ध में पकड़े जाते थे उन्हें गुलाम बनाकर रखा जाता था। अकबर ने इस प्रथा को समाप्त कर दिया। शासन के कुछ ही वर्षों बाद उसने तीर्थ-स्थानों की यात्रा करने वाले यात्रियों पर लगाये जाने वाले यात्री कर को भी उठा लिया। अकबर को अपनी प्रजा के मध्य विभिन्न सम्प्रदायों में मतभेद पसंद नहीं था। इसलिए प्रजा में एकता और समानता का भाव उत्पन्न करने की भावना से ही उन्होंने “जजिया-कर” को भी समाप्त कर दिया था। यह कर सभी गैर मुसलमानों को अदा करना पड़ता था।



अकबर धर्म के मामलों में बहुत उदार थे। अपने राज्य में उन्होंने सभी धर्मों के लोगों को अपना-अपना धर्म पालन करने की पूर्ण स्वतंत्रता दे रखी थी। वह देश में केवल राजनीतिक एकता ही नहीं स्थापित करना चाहते थे बल्कि सांस्कृतिक एवं धार्मिक सद्भाव भी कायम करना चाहते थे। इसी से प्रेरित होकर उन्होंने 'दीन-ए-इलाही' नामक एक नया धर्म चलाया, जिसमें सभी धर्मों की अच्छी बातों को ग्रहण किया गया था। यह धर्म रूढ़ियों पर आधारित न होकर तर्क पर आधारित था।

उनका दरबार विद्वान और कलाकारों का केन्द्र था। राज्य भाषा फारसी थी। इसी समय फारसी भाषा में मौलिक रचनाएँ की गईं तथा दूसरी भाषाओं के श्रेष्ठ ग्रन्थों का अनुवाद भी फारसी में किया गया। बहुत से भारतीय तथा विदेशी कवि अकबर के दरबार में रहते थे। अबुल फजल द्वारा लिखित "आइने-अकबरी" में अकबर के द्वारा सहायता प्राप्त उनसठ कवियों का उल्लेख है। उस समय की फारसी भाषा की श्रेष्ठ रचनाओं में अबुल फजल का "अकबरनामा", आइने अकबरी, निजामुद्दीन की "तबक्राते अकबरी", गुलबदन बेगम का "हुमायूँनामा" आदि प्रसिद्ध हैं। अबुल फैजी भी फारसी के श्रेष्ठ कवि थे।

अकबर का शासन काल हिंदी पद्य का स्वर्ण युग था। इसी समय हिंदी के उच्च कोटि के काव्य ग्रन्थों की रचना हुई। हिंदी के प्रसिद्ध कवि तुलसीदास, सूरदास, रहीम, रसखान, बीरबल थे। उस समय की प्रसिद्ध हिंदी रचनाओं में 'रामचरितमानस' और 'सूरसागर' हैं। कुछ मुसलमान कवियों ने भी हिंदी में रचनाएँ कीं। इसमें रहीम जिनका वास्तविक नाम अब्दुरहीम खानखाना था, का नाम सबसे ऊपर है जो फारसी, अरबी, तुर्क तथा संस्कृत भाषा के विद्वान थे। दूसरे मुसलमान हिंदी कवि रसखान थे। अकबर के दीवाने खास में नौ रत्नों को विशेष सम्मान प्राप्त था।

अकबर संगीत के अनन्य प्रेमी थे। संगीत को संरक्षण प्रदान करने के कारण उनके समय में संगीत कला की आश्चर्यजनक उन्नति हुई। हिन्दू तथा मुसलमानों का संगीत मिलकर एक बन गया था। "आइने अकबरी" में उनके दरबार के 36 श्रेष्ठ संगीतज्ञों के नाम दिये हुए हैं। अकबर स्वयं अच्छे गायक थे। तानसेन उनके दरबार के श्रेष्ठ गायक थे। तानसेन ने कई नये रागों की सृष्टि की। दूसरे प्रसिद्ध गायक बैजू बावरा थे। ऐसी किंवदंतियाँ हैं कि बैजू बावरा की तानसेन के साथ संगीत की प्रतियोगिता हुई थी और उन्होंने अपने गायन से तानसेन को परास्त कर दिया था। संगीत की दो भिन्न-भिन्न शैलियों को मिलाकर एक करने का तथा भारतीय राष्ट्रीय संगीत को जन्म देने का श्रेय अकबर को ही है।

अकबर ने स्थापत्य कला की भी नयी शैली को जन्म दिया। उन्होंने आगरा, इलाहाबाद तथा लाहौर में तीन विशाल किले बनवाए। अकबर के समय की वास्तुकला का सबसे अच्छा नमूना फतेहपुर सीकरी में निर्मित इमारतें हैं। मुगल स्थापत्य कला का प्रभाव देश की सभी तत्कालीन इमारतों पर पड़ा। अकबर के साम्राज्य में बड़े-बड़े समृद्ध शाली नगर थे जिनमें दिल्ली, आगरा, फतेहपुर सीकरी, अजमेर, लाहौर, मुल्तान, उज्जैन, बुरहानपुर, अहमदाबाद, बनारस, इलाहाबाद, पटना, हुगली, ढाका तथा चटगाँव आदि विशेष प्रसिद्ध हैं। अकबर को चित्रकारी से भी बहुत प्रेम था। उनके दरबार में बहुत से योग्य और कुशल चित्रकार थे।

अकबर ऐसे उल्लेखनीय शासकों में एक हैं जिन्होंने अपनी राष्ट्रीय भावना, धार्मिक सहिष्णुता और निपुण शासन से भारत के इतिहास में एक विशेष स्थान प्राप्त किया। वे विदेशी आततायी तैमूर और चंगेज ख़ाँ के वंशज थे किंतु उन्होंने अपने को पूरी तरह भारतीय बना लिया और देश के सर्वांगीण विकास के कार्यों में उसी प्रकार दत्त-चित्त होकर लगे रहे जैसे वे मूलरूप से भारतीय हों। भारत का इतिहास उन्हें अकबर महान के रूप में सदैव याद रखेगा।

अभ्यास

1. अकबर अपनी किन विशेषताओं के लिए याद रखे जाएँगे ?
2. अकबर ने 'दीन-ए-इलाही' सम्प्रदाय क्यों चलाया ?
3. अकबर के दरबार में कौन-कौन से विद्वान रहते थे ?